जीवन की शाम

संसार और मोक्ष के
भावों और अभावों के
विपरीत सिरों को सम्हाले सम्हाले
घूमने–घुमाने में
मिलने–मिलाने में
पढने–पढ़ाने में ही
इस जिंदगी की शाम हो गई।
आ चुके हैं अब उम्र के प्लेट फार्म पर
इंतजार में – मौत की ट्रेन के।
शायद अभी ट्रेन आने में कुछ देर है
सिग्नल भी नहीं हुआ है
तो कर रहे हैं इधर–उधर चहलकदमी हम
और याद कर रहे हैं पुराने दिन, पुराने क्षण,
मित्र और सभी रिश्तेदारगण,
परिचितों और उनके सुगंध भरे दिल,
जब हम घिरे थे– छोटे छोटे सुखों के सितारों से
जो टंके रहे गये–बीते काल की काली चादर में
और उस चांद की की चाह में जागा किये
जिसे कभी ऊगना ही न था।
रह रहकर याद आती हैं खास घटनायें
तभी घंटी बजी –
शायद ट्रेन ने पिछला स्टेशन छोड़ दिया है
तभी ख्याल आया कि हम
अपनी गठरी सम्हाल लें
पीछे मुड़कर निहार लें
कहीं कुछ छूट नहीं गया है?
उन गुनाहों को निहार लें
जो यहीं न छूट जायें बाद हमारे
जो दूसरों की तकलीफ का कारण बनें।
तो ज्यादा अच्छा है कि
ले चलें साथ अपने–अपनी कहानी
इसी में है बुद्धिमानी।
विवेकवान को राग द्वेष, प्रेम–स्नेह
दया उपकार पर का अपने पर उपकार,
चैतन्य की स्थिति–सभी याद रहते हैं।
यद्यपि वे जानते हैं कि
रागादि तो चैतन्य की स्थिति में ही होता है
जगत जिसमें सोता है विवेकवान उसमें
जागता है
जिसमें ज्ञानी जागते हैं
उसमें जगत सोता है
जिसमें जगत जागता है
उसमें ज्ञानी सोते हैं।
जिसके जीवन में
सत्लक्ष्य, सत्संकल्प और सत्कर्म हैं
वे ही मोक्ष में जीते हैं।
सदाचार रुपी धन के सामने
स्वर्ण, रजत, हीरे मोती का कोई
मूल्य नहीं होता है। अत: स्वर्ण
मोहरों के संग्रह करने के बजाय,
स्वर्ण मयी विचारों का संग्रह
करना ही हितकर है।
विराट अंधकार के उमड़ने के पहले की
यह जीवन की शाम है
इसमें विषय कषायों में डूबने का नहीं
सम्यग्दर्शन के शीतल प्रकाश का काम है।

– प्रेमचन्द जैन, वैभव नगर, इन्दौर

क्या अंतरजातीय विवाह समाज को पतन की ओर ले जा रहे हैं?

गतांक से आगे –

जिस प्रकार पशुओं के कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र हैं ठीक उसी प्रकार वनस्पतियों, अनाज एवं फलों को संकरित कर उत्पादित करने के लिये खाद एवं बीज निगम के फार्म हाउस मौजूद है। जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है कि अनाज, वनस्पति एवं फल विभिन्न जाति के पाये जाते हैं, फार्म हाउस में इन्हें अलग अलग प्रजाति को पृथक पृथक क्यारियों में बोया जाता है। पुष्पित होने पर एक प्रजाति का पुष्प पुंकेसर कोमल हाथों से दूसरी प्रजाति के पुष्प पर गिराया जाता है एवं तत्काल उस निषेचित पुष्प को कपड़े की छोटी थैली से ढंककर बांध दिया जाता है ताकि वह पुष्प स्वजाति के पुंकेसर के संपर्क से दूर रहे। यह कपड़े की थैली एक अंतराल के बाद उतार ली जाती है। अब तक पुष्प के फल या बीज बनने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। परिपक्व होने पर यह बीज किसानों को 'उन्नत किस्म' के नाम से अधिक दामों पर बेचा जाता है। यह बीज अगले सीजन में कृषक द्वारा बाये जाने पर एक ही प्रकार के पौधे एवं पुष्प तत्पश्चात फल प्राप्त होते हैं साधारणत: यह फल अथवा सब्जी (वनस्पति) आकर्षक एवं गूदेदार दिखाई देती है और बाजार में ग्राहकों द्वारा खरीद ली जाती है इस प्रकार किसी भी वानस्पतिक उत्पाद को संकरित किया जाता है जो कि कृत्रिम तरीके से ही प्राप्त किया जाना संभव है। इस संकरित वानस्पतिक उत्पाद में निम्नलिखित दोष है जिसकी ओर सुधी पाठकों का ध्यान आकर्षित करना मैं अपना धर्म एवं कर्त्तव्य मानता हूँ –

1) संकरित उत्पाद स्वाद, गंध एवं औषधीय गुण से सर्वथा हीन होते है; इनके उपभोग से मात्र पेट का भरण होता है, पोषण नहीं। हमारी बीजोत्पादक क्षमता को ऐसी सामग्री के उपयोग से पुष्ट नहीं किया जा सकता।

2) संकरित फल में बीज या तो होते नहीं है अथवा अत्यंत क्षीण होते है । कमजोर एवं कम मात्रा में जो कि वंश वृद्धि के लिए सर्वथा प्रतिकूल है।

3) लगभग तीन से पांच बार के चक्र में अर्थात् पुन: पुन: बोया जाने पर फल अथवा पौधा, अल्पल्प, कमजोर एवं उत्पादन शून्यवत् हो जाता है, फलत: किसानों को खाद एवं बीज निगम से पुन: तैय्यार अथवा बहुराष्ट्रीय कंपनियों से तथाकथित उन्नत किस्म का बीज बार बार खरीदना पड़ता है। कृत्रिम तरीके से निषेचित पौधा एवं उत्पाद जब स्वयं के बीजों को पुष्ट नहीं करता तब ऐसी सामग्री का उपभोग हमें भी किसी प्रकार की पुष्टता प्रदान नहीं करता। पशुओं के कृत्रिम गर्भाधान से प्राप्त उत्पादक पदार्थ एवं उन पशुओं की संतानों के बाबत गुण हीनता को हम इसी प्रकार जान सकते हैं वस्तुत: इस तथ्य की ओर सुधी पाठकों को ध्यान आकर्षित किया जा रहा है कि पशु अपनी जातिगत गंध के माध्यम से स्वाभाविक तरीके से नर–मादा एक दूसरे के नजदीक आते हैं तब संतान एवं उत्पाद की गुणवत्ता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं है, यही स्वाभाविक है और प्रकृति सम्मत भी । चूंकि मनुष्य अपनी स्वाभाविक गंध एवं पहचान भूल गया है अत: ऋषि मुनियों ने हमें जाति संस्था में वर्गीकरण कर आपस में पहचानना सिखाया है। इस पर टिके रहकर हमें अपना अस्तित्व बचाये रखना है।

भौतिक दृष्टि से देखने पर अंतरजातीय संबंधों के फलस्वरुप उत्पन्न संतानों के रुप एवं वाचालता पर सभी मुग्ध हो सकते है; किन्तु इन संतानों के वयस्क होने पर सभी प्रकार के गंभीर परिणाम इनके जन्मदाता को ही भोगने पड़ते हैं।

ऐसे तमाम दम्पति जिन्होंने अंतरजातीय शादियां की है इन सबकी संताने यदि परस्पर आगामी कई पीढ़ियों तक शादियां करे तो लगभग उसे पांच पीढ़ी पश्चात संतान के क्रम को चलाना मुश्किल हो सकता है। कारण यह है कि प्रकृति इन संतानों की बीजोत्पादक क्षमता को निरंतर कम करती चलती है।

यूरोपीय देशों में जनसंख्या के स्थिर रहने एवं निरंतर आ रही जन्मदर में कमी का रहस्य शायद सुधी पाठकों को समझ आ रहा होगा । अंतरजातीय संबंधों के परिणाम मात्र उपरोक्त तक ही सीमित नहीं हैं। विभिन्न यौन रोगों का कारण इस संबंधों में अंतरनिहित है।

– राजकुमार जैन 'करैरावाले'

अभी तक आपने पढ़ा –

प्रत्येक जीव को प्राप्त शरीर एक योगिकीय संरचना है मामूली सा परिवर्तन भी मूल यौगिक अर्थात बीज अर्थात आत्मा या जीव को प्राप्त शरीर का संपूर्ण यौगिकीय चरित्र को बदल देता है साथ ही रुप, गुण, धर्म भी बदल जाते है। यह वैज्ञानिक एवं प्राकृतिक व्यवस्था है।

अनाज, औषधि व दुधारु पशुओं में योगिकीय परिवर्तन का असर हम देख ही रहे है प्रकृति के नियमों के विपरित निषेचन से रचना किसी का भी प्रतिनिधित्व नहीं करती है शनै–शनै यह संरचना अपनी स्वाभाविक ऊर्जा, गुण एवं पोषक तत्व खो देती है।

चौरासी लाख योनि में श्रेष्ठतम मनुष्य जन्म में हम अपने वंश, कुल, परम्परा और श्रावकपन को अक्षुण्य बनाए इसके लिए हमें गंभीरता से विचार करने की जरुरत है।

पाठको की कलम से ...

गोलालारीय दर्शन पत्रिका निरंतर प्राप्त हो रही है। गत अंक में समाज की प्रतिभा सिम्मी जैन की उपलब्धि को आपने संपूर्ण समाज के सामने बहुत ही खूबसूरती से रखा है। जिसके लिए साधुवाद।

निश्चित ही समाज को इस प्रकार की पत्रिका की नितांत आवश्यकता थी। समाजजनों को धार्मिक कार्यों में दान के साथ समाज निर्माण के कार्यों में संलग्न इस पत्रिका को भी आर्थिक संबल प्रदान करना चहिए ताकि यह पत्रिका राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिमाह प्रकाशित हो सके।

– सीमा अनिल जैन, ललितपुर

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ स्तरीय है श्री राजकुमार जैन का लेख 'क्या अंतरजातीय विवाह' व साधना जैन की रचना 'मृत्युभोज सर्वथा अनुचित' सोचने पर विवश कर देती है। प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित कर एक अनुकरणीय पहल शुरु की है। 'हमारे संगठन हमारी शक्ति' से आप स्थानीय समाज के प्रतिनिधियों के विचारों एवं योजनाओं से अवगत करा रहे है, अच्छा प्रयास है। मेरा मानना है कि आपने परिवार में होने वाले मांगलिक प्रसंगों की सचित्र जानकारी प्रकाशित कराकर हम इस पत्रिका को आर्थिक योगदान प्रदान कर तो सकते ही है। साथ ही अपनी खुशियों को अपनों के बीच बांटने का आनंद भी उठा सकते है।

– श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, अहमदाबाद

कल, आज और कल

कल की आशा में जीने वालों,
किसन कल को देखा है;
करना है जो आज करो वह,
कल कर्मो की रेखा है।
किसने देखा आने वाला कल,
क्यों ? कहाँ ? कब ? क्या? होगा;
अशुभ कर्म से अशुभ उदय है,
शुभ कर्मों से शुभ भोगा ।
कल की चाहत, कल के सपनें,
पल में – निष्फल हो जाते हैं;
आशाओं के स्वप्न सलोने,
अंधियारों में खो जाते हैं।
अंधियारे की काली कालिख,
जब जीवन पर छाती है;
उगता सूरज ढल जाता है,
रात लंबी हो जाती हैं।
रातों के वीराने में हम,
हर पल कल को रोते हैं;
आते कल की आशा में,
हाथ आज से धोते हैं।
हाथ लगा न आज अगर तो
कल भी हाथ न आयेगा;
दूर क्षितिज के जल सा कल,
मृग तृष्णा में छिन जायेगा।
मृगतृष्णा कब छूटी है,
कब टूटे है आशा के तार;
झूठी ममता, झूठी माया,
झूठे दुनिया के व्यापार ।
आशावादी कहलाने वालों,
कैसे जीवन को सहलाओंगे,
दो क्षण झूठा जीवन जीकर
कब तक मन को बहलाओंगे।
आज मिला है तुम्हें प्रिये जो,
फल है कर्मों का बासी;
ऐसा कुछ तुम आज करो,
होवे न जग मे हंसी।
कैसा कल और कैसे सपने,
कैसे कल की आशा की;
हर उजले दिन के पीछे पाई,
नीरस निशा निराशा की।

– सुखनंदन कुमार जैन 'प्रशांत', राजदीप पार्क, अहमदाबाद

जीवन का यह उज्जवल दीपक
पल पल बुझता जावे
मानव मन के महल बनावे
तन कुटिया क्षण क्षण गिरती जावे।

बीतने वाली हर घड़ी को,
कौन लौटाकर लायेगा
इस धरा का इस धरा पर
सब धरा रह जायेगा।

आशा पल पल बढ़ती जावे
आयु घटती जावे
काया निशिदिन जर्जर होवे
माया बढ़ती जावे

आज सरीखा है मंगल अवसर,
कल आवे, न आवे
कौन जानता है कि किस पल,
क्या घटना घट जावे।